खान जानीबेग का घोड़ा

खान जानीबेग के पास एक नस्लदार घोड़ा था। उसे घोड़ा नहीं, तूफान कहना चाहिए। खान को उस पर बहुत गर्व था और वह उसे दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार करता था। वह तेज़ घोड़ा एक बार बीमार हो गया। खान दुखी हो गया। उसने सारे कामकाज छोड़ दिए। वह न सोता था, न खाता था, न पीता था। इसकी खबर सबको हो गई।

"अगर किसी ने मुझे यह बताने का साहस किया कि मेरा प्यारा घोड़ा मर गया है, तो मैं उसके मुँह में कील ठोंक दूँगा!"

दरबारियों में आतंक छा गया। खान के नौकरों की ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। साईस दिन-रात घोड़े के पास रहने लगे। लेकिन घोड़ा लड़खड़ाकर गिरा और मर गया। अब वे क्या कर सकते थे? सब अपनी मौत का इन्तज़ार करने लगे। पति पत्नियों से विदा लेने लगे, माता-पिता सन्तानों से।

तब जिरेंशे खान के पास गया।

"तुम मुझसे घोड़े के बारे में बात करना चाहते हो?"

"जी, जहाँपनाह।"

"घोड़े को आखिर क्या हुआ है? जवाब दो!"

"हुज़ूरे आलम! आप निश्चिंत रहें। घोड़े को कुछ नहीं हुआ है। वह बिलकुल पहले जैसा ही है, बस चारा मुँह में नहीं लेता है, आँखें नहीं खोलता है, न पैर चलाता है और न ही दुम हिलाता है।"

"इसका मतलब है कि मेरा घोड़ा मर गया! खान चिल्लाया।"

"सचमुच यही बात है, हुज़ूरे आलम!"

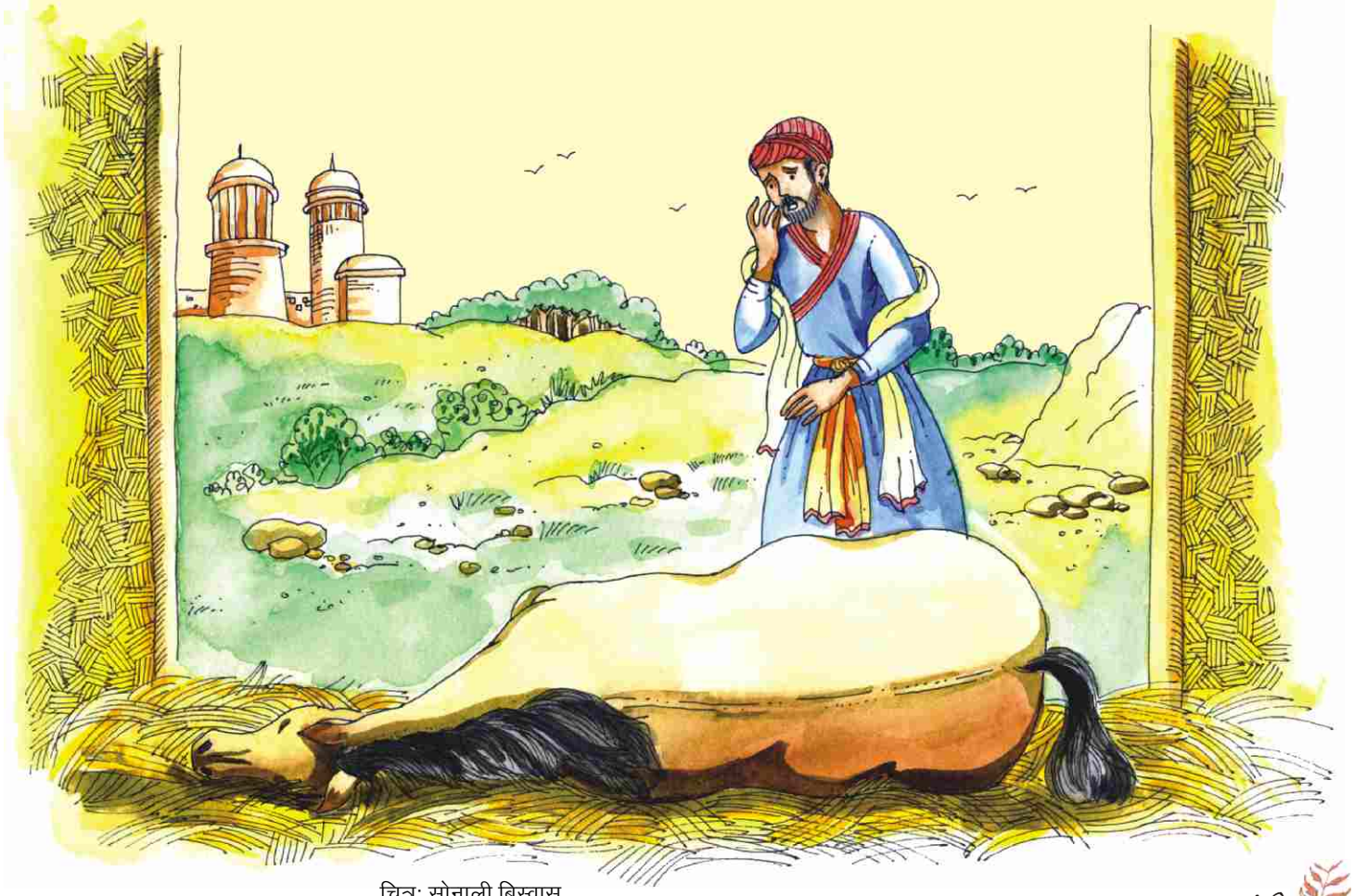

चित्रः सोनाली बिस्वास